अध्याय 7 — एक अनचाहा सत्य

कॉलेज की छुट्टी हो चुकी थी।

काव्या और आरव धीरे-धीरे घर की ओर जा रहे थे। दोनों के बीच भविष्य को लेकर बातचीत चल रही थी।

काव्या ने पूछा—

“आरव, कॉलेज की पढ़ाई पूरी होने के बाद तुम क्या करना चाहते हो?”

“अभी तक निश्चित नहीं किया है।”

“क्या? तुम्हें अपने भविष्य के विषय में कुछ भी नहीं पता?”

आरव हँसने लगा।

“इतना अवश्य पता है कि मेरे भविष्य में तुम हो।”

काव्या मुस्कुराई।

“और यदि मेरे परिवार ने हमारे विवाह के लिए मना कर दिया तो?”

“तो उन्हें समझाएँगे।”

“और यदि फिर भी नहीं माने?”

“तो फिर समझाएँगे।”

“कितनी बार?”

“जब तक मान नहीं जाते।”

काव्या हँस पड़ी।

कुछ दूर चलने के बाद आरव ने उससे पूछा—

“लेकिन तुम अपने परिवार की बात क्यों कर रही हो? तुम्हारे माता-पिता तो तुम्हारे बचपन में ही...”

काव्या के चेहरे की मुस्कान धीरे-धीरे समाप्त हो गई।

“माता-पिता नहीं हैं तो क्या हुआ? जिन लोगों ने मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया है, उनकी भावनाओं का भी तो ध्यान रखना होगा।”

आरव कुछ क्षण शांत रहा।

“काव्या, क्या तुम्हें अपने माता-पिता के विषय में कुछ याद है?”

“नहीं। बस कुछ पुराने चित्र हैं। जब भी उन्हें देखती हूँ तो लगता है कि काश उनके साथ कुछ समय बिताने का अवसर मिला होता।”

आरव उसकी भावनाओं को अच्छी तरह समझ सकता था।

उसके अपने जीवन में भी यही रिक्तता थी।

काव्या ने पूछा—

“यदि तुम्हें अपने माता-पिता से केवल एक बार मिलने का अवसर मिले, तो तुम उनसे क्या कहोगे?”

आरव कुछ सोचने लगा।

“शायद कुछ भी नहीं।”

“क्यों?”

“जिनसे मिलने की इच्छा पूरे जीवन रही हो, उन्हें सामने देखकर बोल भी पाऊँगा या नहीं, मुझे नहीं पता।”

काव्या ने उसका हाथ पकड़ लिया।

कुछ दूर दोनों बिना कुछ बोले चलते रहे।

उन्हें एक-दूसरे की भावनाएँ समझने के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं थी।

एक साधारण परिवार

दूसरी ओर युवराज अपने घर में बैठा किसी की प्रतीक्षा कर रहा था।

उसके सामने एक व्यक्ति आया और उसने कुछ दस्तावेज मेज पर रख दिए।

“आपने जिस विद्यार्थी के विषय में जानकारी माँगी थी, उसकी जानकारी मिल गई है।”

युवराज ने उत्सुकता से दस्तावेज उठाए।

“बताओ।”

“उसका नाम आरव है। माता-पिता का बचपन में ही निधन हो गया था। अपने दादाजी के साथ रहता है। परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य है। किसी बड़े व्यावसायिक परिवार से उसका कोई संबंध नहीं है।”

युवराज के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

“और शक्तियाँ?”

“उसके नाम पर किसी भी प्रकार की शक्ति खरीदने का कोई अभिलेख नहीं मिला है।”

“अर्थात उसके पास कोई शक्ति भी नहीं है?”

“उपलब्ध जानकारी के अनुसार तो नहीं।”

युवराज कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया।

उसे आश्चर्य हो रहा था कि एक ऐसा युवक, जिसके पास न धन था, न कोई सामाजिक प्रतिष्ठा और न ही कोई खरीदी हुई शक्ति, उसके सामने इतने आत्मविश्वास से कैसे खड़ा हो सकता था।

उसने पुनः दस्तावेजों की ओर देखा।

“ठीक है, तुम जा सकते हो।”

उस व्यक्ति के जाने के बाद युवराज ने आरव के घर का पता अपने मोबाइल में सुरक्षित कर लिया।

उसके मन में एक विचार उत्पन्न हुआ।

क्यों न वह स्वयं उस घर को जाकर देखे?

एक अप्रत्याशित अतिथि

अगले दिन रविवार था।

आरव घर की सफाई करने में दादाजी की सहायता कर रहा था।

तभी दरवाजे की घंटी बजी।

आरव ने जाकर दरवाजा खोला।

सामने युवराज खड़ा था।

“अरे! तुम यहाँ?”

युवराज मुस्कुराया।

“सोचा आज अपने मित्र से उसके घर पर मिल लिया जाए।”

“लेकिन तुम्हें मेरे घर का पता कैसे मिला?”

“कॉलेज से मिल गया। क्या अब अपने मित्र के घर आने के लिए भी अनुमति लेनी पड़ेगी?”

आरव हँसने लगा।

“अरे नहीं, अंदर आओ।”

युवराज घर के भीतर आया।

उसने चारों ओर दृष्टि घुमाई।

साधारण सोफा, लकड़ी की पुरानी मेज, दीवारों पर कुछ चित्र और एक छोटी सी अलमारी।

यह घर उसके अपने घर के एक कमरे से भी छोटा था।

लेकिन घर की प्रत्येक वस्तु व्यवस्थित थी।

आरव ने आवाज लगाई—

“दादाजी! देखिए, मेरा मित्र आया है।”

दादाजी अपने कमरे से बाहर आए।

युवराज पहली बार उनके सामने खड़ा था।

“प्रणाम, दादाजी।”

दादाजी ने कुछ क्षण उसके चेहरे को देखा।

“सदैव सुखी रहो, बेटा।”

आरव ने परिचय करवाया—

“दादाजी, यही युवराज है, जिसके विषय में आपको बताया था।”

दादाजी मुस्कुराए।

“अच्छा! तो तुम हो युवराज।”

युवराज ने पूछा—

“आरव ने मेरे विषय में क्या बताया है आपको?”

“यही कि तुम्हारे पास बहुत कुछ है।”

युवराज गर्व से मुस्कुराया।

“जी, ईश्वर की कृपा से किसी वस्तु की कमी नहीं है।”

दादाजी ने शांत स्वर में कहा—

“यह तो बहुत अच्छी बात है। अब जीवन में यह सीखना कि अपने पास उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग दूसरों के सुख के लिए कैसे किया जाए।”

युवराज को लगा जैसे वह आरव से ही बातचीत कर रहा हो।

शायद आरव को ऐसे विचार इन्हीं से प्राप्त हुए थे।

आरव सभी के लिए चाय बनाने चला गया।

युवराज ने दादाजी से पूछा—

“आप आरव के साथ अकेले ही रहते हैं?”

“हाँ।”

“आपको कठिनाई नहीं होती?”

“किस बात की कठिनाई?”

“इतने छोटे घर में रहना, घर के सभी कार्य स्वयं करना, अपनी आवश्यकताओं के लिए सोचना...”

दादाजी मुस्कुराए।

“बेटा, जिसकी आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, उसे जीवन उतना कठिन नहीं लगता।”

“लेकिन यदि आपके पास बहुत सारा धन हो तो?”

“तो सुविधाएँ बढ़ जाएँगी।”

“और प्रसन्नता?”

दादाजी ने उत्तर दिया—

“उसकी कोई निश्चितता नहीं है।”

तभी आरव चाय लेकर आ गया।

“क्या बात हो रही है आप दोनों के बीच?”

दादाजी हँसने लगे।

“तुम्हारा मित्र मुझे धनवान बनाने की योजना बना रहा है।”

तीनों हँस पड़े।

लेकिन युवराज के मन में एक प्रश्न बना रहा।

इन लोगों के पास इतना कम होने के बाद भी किसी प्रकार की हीन भावना क्यों नहीं थी?

एक पुराना चित्र

चाय पीते समय युवराज की दृष्टि दीवार पर लगे एक चित्र पर पड़ी।

उस चित्र में एक युवक और युवती एक छोटे से बच्चे को गोद में लिए हुए थे।

उसने पूछा—

“आरव, ये कौन हैं?”

आरव ने चित्र की ओर देखा।

“मेरे माता-पिता।”

“और ये बच्चा तुम हो?”

“हाँ।”

युवराज उस चित्र के निकट गया।

उसने कुछ क्षण उसे ध्यान से देखा।

“तुम अपने पिताजी जैसे दिखते हो।”

आरव मुस्कुराया।

“दादाजी भी यही कहते हैं।”

दादाजी की दृष्टि लगातार युवराज पर थी।

युवराज के लिए वह केवल एक साधारण पारिवारिक चित्र था।

लेकिन दादाजी के चेहरे पर उत्पन्न चिंता का कारण कुछ और ही था।

उन्होंने आरव से कहा—

“बेटा, अपने मित्र को अपनी पढ़ाई के विषय में भी कुछ बताओ। कब तक पुरानी बातें करते रहोगे?”

आरव युवराज को अपने कमरे में ले गया।

दोनों ने कुछ समय कॉलेज और पढ़ाई के विषय में बातचीत की।

लगभग एक घंटे बाद युवराज वहाँ से चला गया।

आरव दरवाजे पर खड़ा होकर उसे विदा कर रहा था।

दादाजी पीछे से उसे देखते रहे।

युवराज की कार दृष्टि से दूर होते ही उन्होंने आरव से पूछा—

“बेटा, क्या तुमने उसे अपने घर का पता दिया था?”

“नहीं। वह कह रहा था कि कॉलेज से मिला है।”

दादाजी ने कुछ क्षण सोचकर कहा—

“अच्छा।”

“क्यों? क्या हुआ?”

“कुछ नहीं। बस ऐसे ही पूछ रहा था।”

आरव पुनः घर के कार्यों में व्यस्त हो गया।

लेकिन दादाजी के मन में अब अनेक प्रश्न उत्पन्न हो चुके थे।

पिता की दृष्टि

शाम को युवराज अपने घर पहुँचा।

उसके पिता विशाल बैठक में बैठे कुछ व्यावसायिक दस्तावेज देख रहे थे।

युवराज उनके निकट बैठ गया।

उसके पिता ने पूछा—

“कॉलेज कैसा चल रहा है?”

“अच्छा है।”

“कोई समस्या?”

“समस्या तो नहीं है, लेकिन वहाँ एक ऐसा लड़का है जो स्वयं को कुछ अधिक ही समझता है।”

उसके पिता ने दस्तावेजों से दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा।

“किसी बड़े परिवार से है?”

“नहीं।”

“उसके पास शक्तियाँ हैं?”

“वह भी नहीं।”

“फिर तुम उससे इतना प्रभावित क्यों हो?”

युवराज ने तुरंत कहा—

“मैं उससे प्रभावित नहीं हूँ!”

उसके पिता मुस्कुराए।

“तो फिर तुम्हारी बातचीत में उसका उल्लेख क्यों हो रहा है?”

युवराज कुछ क्षण शांत रहा।

उसके पिता ने दस्तावेज बंद कर दिए।

“याद रखो, युवराज। संसार में प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई आवश्यकता होती है। किसी को धन चाहिए, किसी को प्रतिष्ठा और किसी को सुरक्षा। जब तुम्हें उसकी आवश्यकता पता चल जाती है, तब उसे अपने अनुसार चलाना कठिन नहीं होता।”

युवराज ने पूछा—

“और यदि किसी व्यक्ति को इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए तो?”

उसके पिता के चेहरे की मुस्कान गंभीरता में बदल गई।

“तब उसकी इच्छाओं के स्थान पर उसकी भावनाओं को समझो।”

“भावनाओं को?”

“मनुष्य स्वयं के लिए बहुत कुछ सहन कर सकता है। लेकिन जिनसे वह प्रेम करता है, उनके लिए वही मनुष्य बहुत विवश भी हो सकता है।”

युवराज ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुन रहा था।

उसके मन में काव्या का चेहरा उभरा।

फिर वीर और ईशा के चेहरे।

और अंत में आरव के दादाजी का चेहरा।

अब उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिलने लगा था।

उसके पिता पुनः अपने दस्तावेज देखने लगे।

उन्होंने उस विद्यार्थी का नाम तक नहीं पूछा।

उनके लिए वह उनके पुत्र के कॉलेज जीवन की एक साधारण घटना थी।

लेकिन आने वाले समय में यही साधारण घटना उनके जीवन की सबसे बड़ी समस्या बनने वाली थी।

प्रेम का मूल्य

रात में युवराज ने काव्या को फोन किया।

“नमस्ते, काव्या। क्या कर रही हो?”

“कुछ विशेष नहीं। पढ़ाई कर रही थी।”

“मैं सोच रहा था कि हम सभी किसी दिन बाहर घूमने चलें।”

“अच्छा विचार है। कल कॉलेज में सभी से पूछ लेते हैं।”

युवराज कुछ क्षण रुका।

“मेरा अर्थ था कि इस बार केवल हम दोनों चलें।”

काव्या शांत हो गई।

फिर उसने सहज स्वर में पूछा—

“केवल हम दोनों क्यों?”

“क्या दो मित्र एक साथ कहीं घूमने भी नहीं जा सकते?”

“अवश्य जा सकते हैं। लेकिन तुम्हारे कहने का ढंग मुझे कुछ अलग लगा।”

युवराज हँसा।

“तुम भी आरव की तरह प्रत्येक बात का अर्थ खोजने लगी हो।”

काव्या ने उत्तर दिया—

“और तुम प्रत्येक बात में आरव को क्यों ले आते हो?”

युवराज के पास इसका उत्तर नहीं था।

उसने बातचीत का विषय बदलते हुए पूछा—

“क्या तुम्हें कभी नहीं लगता कि तुम अपने जीवन में इससे अधिक प्राप्त कर सकती हो?”

“किससे अधिक?”

“इस साधारण जीवन से। एक बड़ा घर, महँगी गाड़ियाँ, संसार की सभी सुविधाएँ...”

काव्या मुस्कुराई।

“ये सब प्राप्त करना गलत नहीं है, युवराज। मैं भी जीवन में आगे बढ़ना चाहती हूँ। आरव और मैं दोनों परिश्रम करेंगे और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करेंगे।”

“लेकिन यदि कोई तुम्हें ये सभी सुविधाएँ आज ही देने के लिए तैयार हो तो?”

काव्या कुछ क्षण मौन रही।

फिर बोली—

“यदि उन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए मुझे उस व्यक्ति को छोड़ना पड़े जिससे मैं प्रेम करती हूँ, तो वह सुविधा नहीं, एक सौदा होगा।”

युवराज का चेहरा गंभीर हो गया।

“तुम आरव से इतना प्रेम करती हो?”

“हाँ।”

इस बार काव्या ने बिना किसी संकोच के उत्तर दिया।

“और मैं चाहती हूँ कि तुम हमारे मित्र बने रहो। हमारी मित्रता के बीच ऐसी बातें नहीं आनी चाहिए।”

कुछ देर बाद बातचीत समाप्त हो गई।

युवराज ने अपना मोबाइल मेज पर रख दिया।

जीवन में पहली बार उसे अनुभव हो रहा था कि कुछ ऐसा भी था, जिसे वह अपने धन और शक्तियों से प्राप्त नहीं कर सकता था।

लेकिन इस सत्य को स्वीकार करने के स्थान पर उसके भीतर आरव के प्रति ईर्ष्या और अधिक बढ़ गई।

भविष्य की आहट

उसी रात आरव अपने कमरे में सो रहा था।

दादाजी धीरे से उसके कमरे के बाहर आए।

उन्होंने दरवाजा खोला और सोते हुए आरव को देखा।

कुछ देर वहीं खड़े रहने के बाद वह बैठक में लौट आए।

उनकी दृष्टि दीवार पर लगे आरव के माता-पिता के चित्र पर पड़ी।

उन्होंने धीमे स्वर में कहा—

“आज वह तुम्हारे घर तक पहुँच गया है, आरव।”

कुछ क्षण बाद उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

“इतने वर्षों तक तुम्हें इन परिस्थितियों से दूर रखा। शायद अब वह समय आ गया है, जब तुम्हें स्वयं इनका सामना करना होगा।”

उनके चेहरे पर गहरी चिंता थी।

लेकिन उस चिंता के पीछे एक ऐसी पीड़ा भी छिपी हुई थी, जिसे वह किसी के सामने व्यक्त नहीं कर सकते थे।

उन्होंने पुनः आरव के कमरे की ओर देखा।

“काश, मैं तुम्हें बता पाता कि आने वाले दिनों में तुम्हें किन परिस्थितियों से गुजरना है।”

घर में पूर्ण शांति थी।

दीवार पर लगी घड़ी अपनी सामान्य गति से चल रही थी।

समय आगे बढ़ रहा था।

और दादाजी की चिंता भी।

आखिर युवराज के आरव के घर आने से दादाजी इतने चिंतित क्यों थे? क्या वह केवल अपने पोते की सुरक्षा को लेकर चिंतित थे, या युवराज के परिवार से उनका कोई पुराना संबंध भी था?

अध्याय 7 समाप्त।